ये अव्यक्त इशारे

ज्वालामुखी योग तपस्या द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन करो

16-08-2023

कर्म में आते, विस्तार में आते, रमणीकता में आते, सम्बन्ध और सम्पर्क में आते, न्यारे बनने का अभ्यास करो। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है, वैसे ही न्यारा होना भी सहज हो। ऐसी प्रैक्टिस चाहिये। अति के समय एक सेकेण्ड में अन्त हो जाये -यह है लास्ट स्टेज का पुरुषार्थ। अभी-अभी अति सम्बन्ध में और अभी-अभी जितना सम्पर्क में उतना न्यारा। जैसे लाइट हाउस में समा जाएं। इसी अभ्यास से लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति बनेगी और अनेक आत्माओं को साक्षात्कार होंगे -यही प्रत्यक्षता का साधन है।

Transform the atmosphere with volcanic yoga tapasya.

While coming into action, coming into expansion, being entertaining or coming into relationship and connection, practise being detached. Just as it is easy to come into relationship and action, in the same way, let it be just as easy to be detached. Such practice is needed. At the time of extreme, let the end come in a second – this is the effort of the last stage. One moment to be in deep relationship and the next, to be just as detached as you are in connection, as though you become merged in a light-house. The stage of a light-house and might-house will be created through this practice and many souls will have visions. This is the means of revelation.